बादल नीला है

बच्चे बोले,
बादल मेरा।
बादल कहता,
बारिश मेरी।
बारिश कहती,
पानी मेरा।
पानी कहता,
चाँद मेरा।
चाँद कहता,
तारे मेरे।
तारे कहते,
पत्ते मेरे।
पत्ते कहते,
हवा मेरी।

शायना, 9 वर्ष

आज तो

कल तो तावड़ा आया
पग ताते होने लगे
बच्चे चिल्लाने लगे
घड़ा पानी पीने लगे
आज तो बारिश आई

मुनाम, 10 वर्ष

बूढ़ा-बूढ़ी

बूढ़ा पैसे कमाता है
बूढ़ी पैसे कमाती है
बूढ़ा लकड़ी जलाता है
बूढ़ी चूल्हा जलाती है
बूढ़ी रोटी बनाती है
बूढ़ा रोटी खाता है

अर्जुन, 7 वर्ष

जयपुर की एक संस्था – दिगंतर में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करने के दौरान ये कविताएँ जन्मीं। संकलनःप्रभात

कछुआ

1. कछुआ बनाने के लिए सबसे पहले दी गई आकृति की सिर्फ बाहर की लाइन को ध्यान से काट लो। टूटी रेखाओं को नहीं काटना है।

2. इसमें बने चित्रों पर खाई व पहाड़ी मोड़ बना लो। कछुए की आँखें बनाकर उसे जैसा चाहो सजा लो।

3. सफेद हिस्से पर भी पहाड़ी व खाई मोड़ बना लो। दोनों मोड़ एक दूसरे से सटे रहे इसलिए आकृति को पलटकर मुड़े हिस्सों को टेप से चिपका लो। इससे कछुए के कवच को गोलाई व उभार मिलेगा।

4 बस तुम्हारा कछुआ तैयार है।

5. इसे चलाने के लिए अखबार की पट्टी को हल्के हाथों से रोल कर लो। यह रोल स्प्रिंग की तरह काम करेगा। अब इसके एक सिरे को कवच के नीचे टेप से चिपका लो। कछुए को ज़रा-सा धक्का देने पर वह थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ेगा।

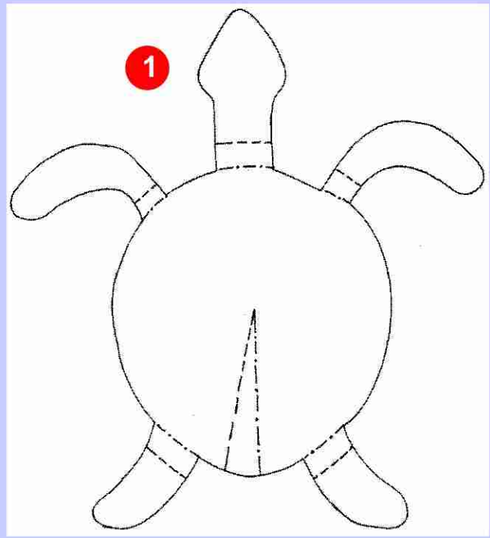

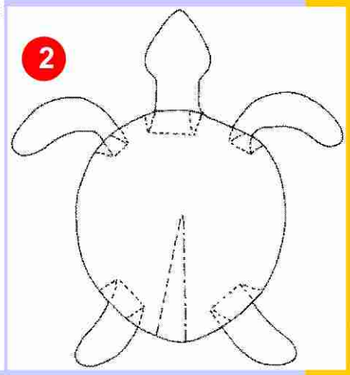

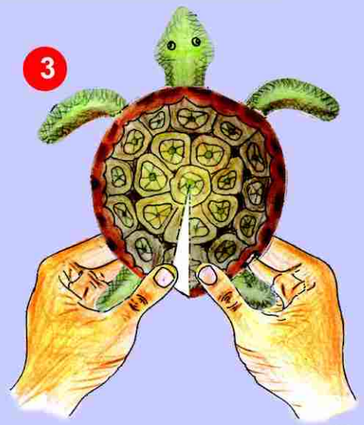

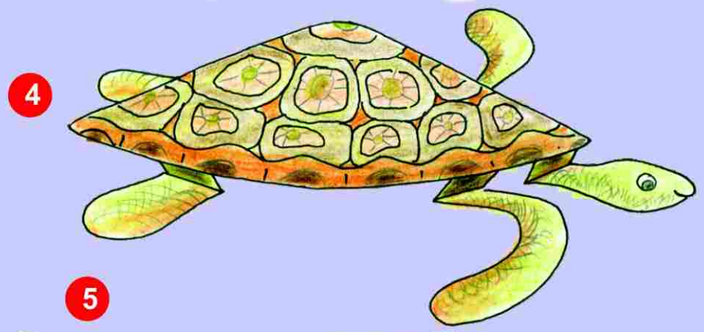

तुम भी सोचो कि कछुए को चलाने के लिए और क्या-क्या किया जा सकता है?

1

पहाड़ी मोड़:
खाई मोड़:

2

3

4

5

चित्रःजितेन्द्र ठाकुर

जानवर

किसी के दो पैर हैं
किसी के हैं चार
कोई जाता है फर्श पर फिसलकर
किसी की खाल है मुलायम रोएँदार
और किसी की शल्की
कोई खूब गब्दू है
कोई एकदम पतलू
किसी के जबड़े हैं बड़े
किसी के पंजे हैं पैने
कोई खाता है माँस
कोई चरता है घास
किसी को पसन्द
गुनगुनी धूप का उजास
कोई लिसलिसा है
कोई खुरदरा
ये सारे जानवर हैं
ये मत पूछो कि क्यों हैं?

शेषाद्रि उदयनी कोट्टीराची, नौ वर्ष, श्री लंका

"शंकर्स वीकली" से साभार। अँग्रेज़ी से अनुवादः प्रभात